NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 28-12-2024

विषय सूची

भारत में लाइटहाउस पर्यटन

2026 में भारत का डीप ओशन अन्वेषण मिशन

2023-24 घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण (HCES) 2023-24

भारत के मत्स्यपालन क्षेत्र को सुदृढ़ बनाना

स्वास्थ्य: 2025 में आशा और वादे की नई किरणें

संक्षिप्त समाचार

बाल्टिक सागर (Baltic Sea)

PM केयर्स फंड

सियांग अपर बहुद्देशीय परियोजना (SUMP)

एच. पाइलोरी का पता लगाने की नई विधि

स्मार्ट सिटी मिशन (SCM)

पनामा नहर (Panama Canal)

ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का 813 वाँ उर्स

चालू खाता घाटा

भारत में लाइटहाउस पर्यटन

समाचार में

भारत में 204 लाइटहाउस हैं, जिनमें से विभिन्न पर्यटन स्थलों के रूप में फिर से तैयार किया जा रहा है।

लाइटहाउस पर्यटन

- लाइटहाउस पर्यटन में लाइटहाउसों और उनके आसपास के क्षेत्रों को जीवंत पर्यटक आकर्षणों के रूप में परिवर्तित करना सम्मिलित है।
- ये संरचनाएँ, जो प्रायः सुंदर तटीय या द्वीपीय स्थानों पर स्थित होती हैं, आगंतुकों को प्राकृतिक सौंदर्य, समुद्री इतिहास और मनोरंजन के अवसरों का एक अद्वितीय संयोजन प्रदान करती हैं।

भारत में लाइटहाउस पर्यटन की संभावनाएँ

- **सामरिक स्थान:** विभिन्न लाइटहाउस भारत के समुद्र तट या सुदूर द्वीपों के लुभावने स्थानों पर स्थित हैं, जहाँ से समुद्र का मनोरम दृश्य दिखाई देता है।
- **सांस्कृतिक महत्त्व:** कुछ लाइटहाउस सदियों पुराने हैं और यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों जैसे तमिलनाडु में महाबलीपुरम या अन्य प्रमुख सांस्कृतिक स्थलों के पास हैं।
- **साहसिक कार्य और अवकाश:** इन स्थलों पर ट्रैकिंग, बोटिंग और जल क्रीड़ा जैसी गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं, जो साहसिक गतिविधियों के शौकीनों को आकर्षित करती हैं।
- **आर्थिक प्रभाव:** लाइटहाउस पर्यटन का विकास स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के साथ-साथ आतिथ्य, परिवहन और हस्तशिल्प रोजगार सृजित कर सकता है।

भारत सरकार द्वारा लाइटहाउस पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए कदम

- केंद्र सरकार भारत की सांस्कृतिक विरासत और समुद्री विरासत को बढ़ाने के लिए अपने व्यापक समुद्री भारत विजन (MIV) 2030 और अमृत काल विजन 2047 के एक भाग के रूप में लाइटहाउस पर्यटन को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रही है।
- **भारतीय लाइटहाउस महोत्सव शृंखला:** प्रथम भारतीय लाइटहाउस महोत्सव, "भारतीय प्रकाश स्तंभ उत्सव" का उद्घाटन सितंबर, 2023 में गोवा में केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय मंत्री द्वारा किया गया था।
    - उसके पश्चात् यह उत्सव प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है, तथा यह प्रकाशस्तंभ पर्यटन का जश्न मनाने और उसे बढ़ावा देने के लिए एक प्रमुख मंच के रूप में कार्य करता है।
- **सागरमाला कार्यक्रम:** लाइटहाउस पर्यटन के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता सागरमाला कार्यक्रम के अंतर्गत उसके प्रयासों और निजी हितधारकों के साथ साझेदारी को बढ़ावा देने पर उसके फोकस से भी स्पष्ट है।
    - यह भारत की समुद्री और आर्थिक प्रगति को आगे बढ़ाने के लिए एकीकृत विकास, बुनियादी ढाँचे के विकास, स्थिरता एवं सामुदायिक कल्याण के मिश्रण का उदाहरण देता है।

हालिया विकास:

- फरवरी 2024 में, PM मोदी ने 10 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में पर्यटक सुविधाओं के साथ 75 लाइटहाउस समर्पित किए।

- इन स्थलों के विकास में ₹60 करोड़ का निवेश किया गया, जिसमें संग्रहालय, एम्फीथिएटर, पार्क आदि सम्मिलित नहीं हैं।
- 2023-24 में 16 लाख से अधिक पर्यटक, 2014 से 400% अधिक, 2024-25 में पहले से ही 10 लाख आगंतुक।

भविष्योन्मुखी रणनीतियाँ

- **सतत् विकास**: जिम्मेदार पर्यटन को बढ़ावा देते हुए नाजुक तटीय पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा के लिए पर्यावरण अनुकूल प्रथाओं पर बल दिया गया।
- **तटीय सर्किटों के साथ एकीकरण**: लाइटहाउस को उनके आकर्षण को बढ़ाने के लिए व्यापक तटीय पर्यटन यात्रा कार्यक्रमों में सम्मिलित किया गया है।
- **जागरुकता अभियान**: घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों के लिए लाइटहाउस स्थलों को प्रदर्शित करने के लिए डिजिटल पहल प्रारंभ की जा रही है।
- **कौशल विकास**: स्थानीय समुदायों को आतिथ्य और पर्यटन से संबंधित क्षेत्रों में रोजगार के लिए आवश्यक कौशल से युक्त करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ किए जा रहे हैं।

निष्कर्ष

- लाइटहाउस पर्यटन विरासत संरक्षण को आधुनिक पर्यटन के साथ मिश्रित करता है, जो आगंतुकों को अद्वितीय अनुभव प्रदान करता है तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था और सामुदायिक सशक्तिकरण में योगदान देता है।
- सागरमाला कार्यक्रम के अंतर्गत निरंतर प्रयास और निजी हितधारकों की भागीदारी से लाइटहाउस पर्यटन को भारत के पर्यटन उद्योग की आधारशिला के रूप में मजबूती मिलेगी।

Source: PIB

2026 में भारत का डीप ओशन अन्वेषण मिशन

संदर्भ

- भारत सरकार अपने महत्त्वाकांक्षी 'डीप सी मिशन' के हिस्से के रूप में एक मानव को गहरे समुद्र में भेजने की तैयारी कर रही है, जो 2026 की शुरुआत में होने वाले देश के पहले मानव अंतरिक्ष मिशन के अनुरूप है।

डीप सी मिशन

- DOM को पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (MoES) द्वारा कार्यान्वित किया गया है और चरणबद्ध तरीके से पाँच वर्ष की अवधि में लगभग 4,077 करोड़ रुपये की लागत से 2021 में अनुमोदित किया गया था।
- मिशन के छह स्तंभ हैं:
  - डीप ओशन में अन्वेषण के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास और तीन लोगों को समुद्र में 6,000 मीटर की गहराई तक ले जाने के लिए एक मानवयुक्त पनडुब्बी;
  - समुद्री जलवायु परिवर्तन सलाहकार सेवाओं का विकास, जिसमें भविष्य के जलवायु अनुमानों को समझने और प्रदान करने के लिए समुद्री अवलोकनों एवं मॉडलों की एक शृंखला सम्मिलित है;
  - डीप ओशन में जैव विविधता की खोज और संरक्षण के लिए तकनीकी नवाचार;

- डीप ओशन में सर्वेक्षण और अन्वेषण का उद्देश्य हिंद महासागर के मध्य-महासागरीय कटकों के साथ बहु-धातु हाइड्रोथर्मल सल्फाइड खनिजकरण की संभावित स्थलों की पहचान करना है;
- महासागर से ऊर्जा और स्वच्छ जल का दोहन
- महासागर जीव विज्ञान के लिए एक उन्नत समुद्री स्टेशन की स्थापना, प्रतिभा के पोषण और समुद्री जीव विज्ञान एवं नीली जैव प्रौद्योगिकी में नए अवसरों को बढ़ावा देने के केंद्र के रूप में।

उद्देश्य

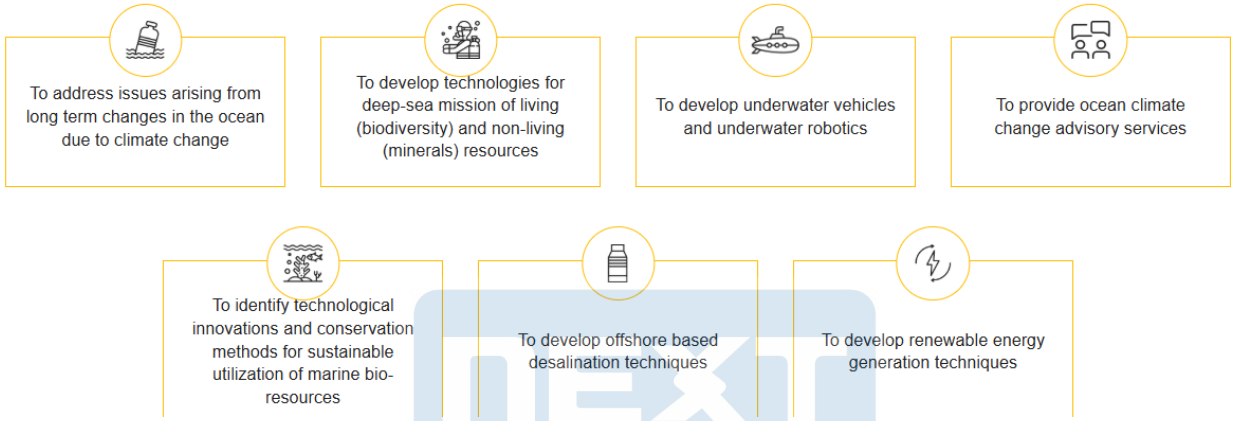

इससे जुड़े विकास

- **समुद्रयान मिशन:** DOM के एक भाग के रूप में, भारत के प्रमुख डीप ओशन मिशन, 'समुद्रयान' को 2021 में पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा प्रारंभ किया गया था।
  - मध्य हिंद महासागर में समुद्र तल तक 6,000 मीटर की गहराई तक पहुँचने वाला दल अभियान डीप ओशन में पनडुब्बी "मत्स्य 6000" द्वारा पूरा किया जाएगा।

मत्स्य 6000

- मत्स्य6000 भारत की प्रमुख डीप ओशन में चलने वाली मानव पनडुब्बी है जिसका लक्ष्य 6,000 मीटर की गहराई तक समुद्र तल तक पहुँचना है।.
- तीन चालक दल के सदस्यों के साथ, जिन्हें "एक्वानॉट्स" कहा जाता है, सबमर्सिबल में अवलोकन, नमूना संग्रह, बुनियादी वीडियो और ऑडियो रिकॉर्डिंग और प्रयोग की सुविधा के लिए डिज़ाइन किए गए वैज्ञानिक उपकरणों और उपकरणों का एक सूट होता है।

मत्स्य 6000 की विशेषताएँ

- मत्स्य 6000 रिमोट संचालित वाहनों (ROV) एवं स्वायत्त रिमोट वाहनों (AUV.) की सर्वोत्तम और सबसे व्यवहार्य सुविधाओं को जोड़ती है।
- मत्स्य 6000 का आंतरिक भाग 2.1 मीटर व्यास वाले एक विशेष गोले में यात्रा करने वाले तीन मनुष्यों को समायोजित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- टाइटेनियम मिश्र धातु से निर्मित इस गोले को 6,000 बार तक का दाब सहने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- यह अंडरवाटर थ्रस्टर्स का उपयोग करके लगभग 5.5 किमी/घंटा की गति से आगे बढ़ सकता है

महत्त्व

- 'न्यू इंडिया 2030' दस्तावेज में भारत के विकास के लिए छठे मुख्य उद्देश्य के रूप में ब्लू इकॉनमी(नीली अर्थव्यवस्था) को रेखांकित किया गया है। संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2021-2030 को **'महासागर विज्ञान का दशक'** घोषित किया है।
- DOM प्रधान मंत्री के विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार सलाहकार परिषद (PMSTIAC) के अंतर्गत नौ मिशनों में से एक है।
- यह मिशन पॉलीमेटेलिक नोड्यूल्स और पॉलीमेटैलिक सल्फाइड सहित मूल्यवान संसाधनों के स्थायी निष्कर्षण के लिए महत्त्वपूर्ण है।

चुनौतियाँ

- **डीप ओशन में उच्च दाब:** ऐसी उच्च दाब वाली परिस्थितियों में कार्य करने के लिए सतत् धातुओं या सामग्रियों से तैयार किए गए सावधानीपूर्वक डिजाइन किए गए उपकरणों के उपयोग की आवश्यकता होती है।
- समुद्र तल पर उतरना भी बहुत चुनौतीपूर्ण होता है, क्योंकि इसकी सतह अत्यंत कोमल और पंकयुक्त होती है।
- खनिजों को सतह पर लाने के लिए बड़ी मात्रा में शक्ति और ऊर्जा की आवश्यकता होती है।
- खराब दृश्यता एक महत्त्वपूर्ण बाधा उत्पन्न करती है क्योंकि प्राकृतिक प्रकाश सतह से केवल कुछ दस मीटर नीचे ही प्रवेश कर पाता है,

भविष्य के दृष्टिकोण

- डीप सी मिशन में भारत की आर्थिक वृद्धि को गति देने की अपार संभावनाएँ हैं।
- इस तरह की पहल करने वाले छठे देश के रूप में, भारत का पहला मानवयुक्त पनडुब्बी, मत्स्य 6000, डीप ओशन के रहस्यों का पता लगाएगा।
    - डीप ओशन अन्वेषण में पहले से ही निवेश करने वाले देशों की श्रेणी में सम्मिलित होकर, भारत स्वयं को महासागर विज्ञान और सतत् संसाधन प्रबंधन में वैश्विक नेता के रूप में स्थापित कर रहा है।

Source: BS

घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण (HCES) 2023-24

संदर्भ

- सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) ने 2022-23 और 2023-24 के दौरान घरेलू उपभोग व्यय पर दो लगातार सर्वेक्षण आयोजित करने का निर्णय लिया।

परिचय

- सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के अंतर्गत राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (NSSO) नियमित अंतराल पर उपभोग/उपभोक्ता व्यय पर घरेलू सर्वेक्षण आयोजित करता रहा है, जो सामान्यतः एक वर्ष की अवधि का होता है।

- **1972 से,** NSSO उपभोक्ता व्यय सर्वेक्षण आयोजित कर रहा है।
- इसे परिवारों द्वारा वस्तुओं और सेवाओं की खपत के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- सर्वेक्षण का उद्देश्य देश के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लिए घरेलू मासिक प्रति व्यक्ति उपभोग व्यय (MPCE) और इसके वितरण का अलग-अलग अनुमान लगाना है।

प्रयुक्त पद्धति

- वर्तमान सर्वेक्षण में, तीन 3 प्रश्नावली का उपयोग किया गया, जिसमें सम्मिलित हैं:
  - खाद्य वस्तुएँ;
  - उपभोग्य वस्तुएँ और सेवा से संबंधित वस्तुएँ, और
  - टिकाऊ (durable) वस्तुओं का उपयोग किया गया।
- सर्वेक्षण में विभिन्न सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों के माध्यम से परिवारों द्वारा निःशुल्क प्राप्त और उपभोग की जाने वाली वस्तुओं की संख्या की खपत की मात्रा पर जानकारी एकत्र करने के लिए एक अलग प्रावधान था।

कार्यप्रणाली में परिवर्तन

- सम्मिलित की गई वस्तुओं की संख्या 347 से बढ़कर 405 हो गयी है।
- सर्वेक्षण की प्रश्नावली में परिवर्तन किया गया है।
  - पहले के सर्वेक्षण में प्रयुक्त एकल प्रश्नावली के स्थान पर, HCES 2022-23 में खाद्य, उपभोग्य सामग्रियों और सेवाओं तथा टिकाऊ वस्तुओं के लिए चार अलग-अलग प्रश्नावली प्रस्तुत की गईं।
  - इस प्रकार, पहले के सर्वेक्षणों में एकल दौरे की सामान्य प्रथा के बजाय डेटा संग्रह के लिए विभिन्न दौरे हुए हैं।

2023-24 के लिए प्रमुख विशेषताएँ

- **औसत MPCE:** औसत भारतीय का मासिक व्यय ग्रामीण क्षेत्रों में 9.2% बढ़कर ₹4,122 और शहरी क्षेत्रों में 8.3% बढ़कर ₹6,996 हो गया।

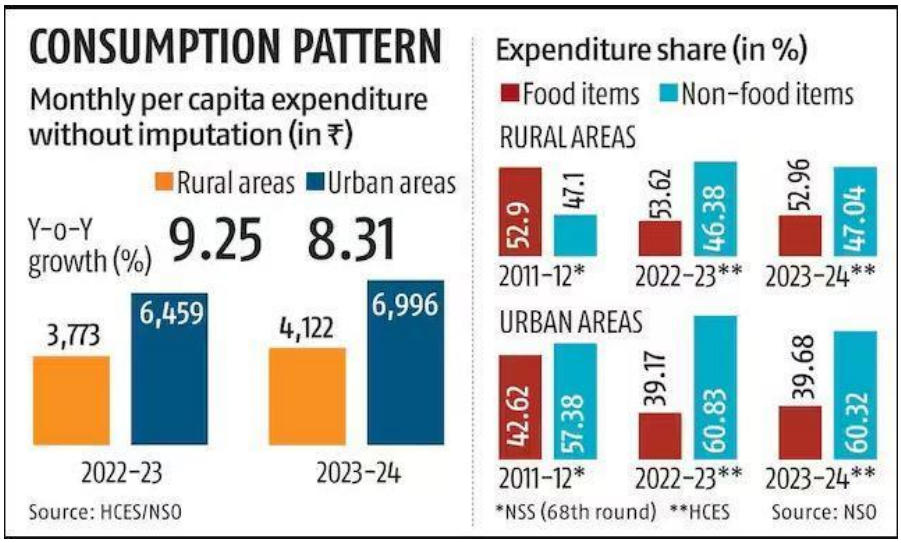

- **ग्रामीण व्यय की प्रवृत्ति:** व्यय का 53% हिस्सा गैर-खाद्य पर खर्च किया गया।
  - कपड़े, बिस्तर और जूते का हिस्सा सबसे बड़ा था।
- **शहरी व्यय की प्रवृत्ति:** गैर-खाद्य वस्तुओं पर व्यय 60% रहा, जिसमें विविध वस्तुओं और मनोरंजन, कपड़े एवं जूते, तथा शिक्षा का स्थान सबसे ऊपर रहा।
  - पेय पदार्थ और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ, सब्जियाँ एवं डेयरी उत्पाद जैसी खाद्य श्रेणियों का शहरी व्यय वृद्धि में 31.5% योगदान रहा।

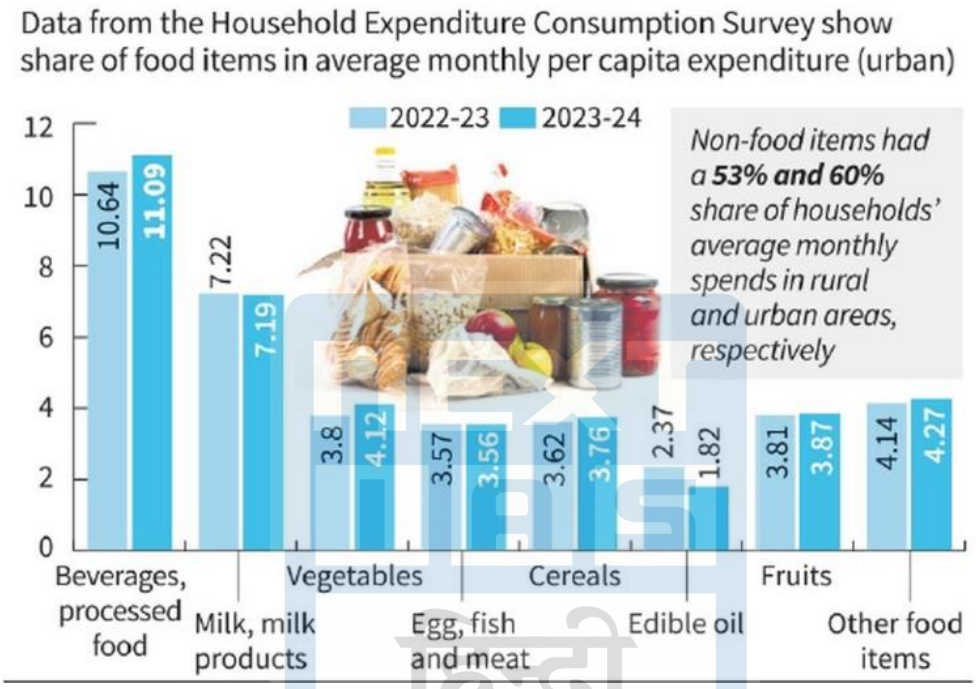

- **ग्रामीण शहरी अंतराल:** यह 2011-12 में 84% से घटकर 2022-23 में 71% हो गयी है।
  - 2023-24 में यह कम होकर 70% पर आ गया।
  - ग्रामीण परिवार अब शहरी परिवारों के व्यय का 69.7% व्यय करते हैं।
  - राज्यों में औसत MPCE में ग्रामीण-शहरी अंतर मेघालय (104%) में सबसे अधिक है, इसके बाद झारखंड (83%) और छत्तीसगढ़ (80%) का स्थान है।
- **MPCE में प्रमुख वृद्धि:** यह भारत की ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों की निचली 5 से 10 प्रतिशत जनसंख्या के लिए अधिकतम रहा है।
- **उपभोग असमानता:** ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में 2022-23 के स्तर से इसमें गिरावट दर्ज हुई है।
- **गिनी गुणांक:** ग्रामीण क्षेत्रों में यह 0.266 से घटकर 0.237 तथा शहरी क्षेत्रों में 0.314 से घटकर 0.284 हो गया है।
  - कम गुणांक कम असमानता को दर्शाता है।
- **क्षेत्रीय उपभोग पैटर्न:** पूर्वी और मध्य राज्यों की तुलना में पश्चिमी और उत्तरी राज्यों में प्रति व्यक्ति खपत सबसे अधिक है।
  - महाराष्ट्र, पंजाब, तमिलनाडु और केरल जैसे राज्यों में व्यय औसत से अधिक है, जबकि पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश एवं ओडिशा जैसे राज्यों में उपभोग औसत से कम है।

- **राज्यों में,** सिक्किम में MPCE सबसे अधिक रहा, जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों में 9,377 रुपये और शहरी क्षेत्रों में 13,927 रुपये रहा, जबकि छत्तीसगढ़ में सबसे कम MPCE दर्ज किया गया।

भविष्य का दृष्टिकोण

- HCES 2023-24 के निष्कर्ष चल रहे आर्थिक सुधार और ग्रामीण और शहरी उपभोग के मध्य कम होते अंतर पर प्रकाश डालते हैं।
- ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में उपभोग असमानता में 2022-23 के स्तर से गिरावट आई है।
- पिछले कुछ वर्षों में ग्रामीण और शहरी MPCE के मध्य का अंतर काफी कम हो गया है, जो ग्रामीण आय में सुधार लाने में सरकारी नीतियों की सफलता को दर्शाता है।
- नीति निर्माता इस डेटा का उपयोग असमानता को कम करने तथा सतत् आर्थिक विकास को समर्थन देने के लिए लक्षित हस्तक्षेपों को डिजाइन करने के लिए कर सकते हैं।

Source: TH

भारत के मत्स्यपालन क्षेत्र को सुदृढ़ बनाना

संदर्भ

- भारत में 2013-14 के पश्चात् से राष्ट्रीय मछली उत्पादन में 83% की वृद्धि देखी गई है, जो 2022-23 में रिकॉर्ड 175 लाख टन है।

भारत का मत्स्यपालन क्षेत्र

- भारत विश्व स्तर पर दूसरा सबसे बड़ा मछली और जलीय कृषि उत्पादक है।
- उत्पादन का 75% हिस्सा अंतर्देशीय मत्स्य पालन से प्राप्त होता है।
- **आंध्र प्रदेश** देश का सबसे बड़ा मछली उत्पादक राज्य है, उसके बाद पश्चिम बंगाल और गुजरात का स्थान है।
- अंतिम छोर तक मत्स्य पालन और जलीय कृषि विस्तार सेवाओं को सुदृढ़ करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।
    - इस तरह के विस्तार से मछुआरों/मत्स्यपालकों को उन्नत प्रजातियों के जीवन चक्र, जल की गुणवत्ता, रोग और उपलब्ध पालन प्रौद्योगिकियों पर अनुरोध-आधारित सेवाएँ उपलब्ध होनी चाहिए।

भारत में मत्स्यपालन क्षेत्र की चुनौतियाँ

- **अत्यधिक मछली पकड़ना:** अत्यधिक मछली पकड़ने के कारण मछली भंडार का अत्यधिक दोहन एक महत्त्वपूर्ण चुनौती है।
- **अवैध, असूचित और अनियमित (IUU) मत्स्यन: IUU** मत्स्यन से मछली भंडार के प्रबंधन और संरक्षण के प्रयासों को नुकसान पहुँचता है।
    - इसमें उचित प्राधिकरण के बिना मछली पकड़ना, पकड़ सीमा की अनदेखी करना तथा प्रतिबंधित मछली पकड़ने के उपकरण का उपयोग करना जैसी गतिविधियाँ सम्मिलित हैं।
- **खराब मत्स्य प्रबंधन:** विनियमों का सीमित प्रवर्तन, मछली स्टॉक पर व्यापक डेटा की कमी, और अपर्याप्त निगरानी एवं नियंत्रण उपाय अति मत्स्यन और IUU मत्स्यन की समस्या को बढ़ाते हैं।

- **बुनियादी ढाँचे और प्रौद्योगिकी का अभाव:** अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे और पुरानी मछली पकड़ने की तकनीक मत्स्यपालन क्षेत्र की दक्षता एवं उत्पादकता में बाधा डालती है।
- **प्रदूषण और आवास विनाश:** औद्योगिक गतिविधियों, तटीय विकास और कृषि अपवाह से होने वाला प्रदूषण समुद्री एवं स्वच्छ जल के आवासों के लिए ख़तरा उत्पन्न करता है।
- **जलवायु परिवर्तन:** जलवायु परिवर्तन महासागर और स्वच्छ जल के वातावरण को बदल रहा है, जिससे मछलियों का वितरण, प्रवास पैटर्न एवं प्रजनन चक्र प्रभावित हो रहे हैं।
- **सामाजिक-आर्थिक मुद्दे:** गरीबी, वैकल्पिक आजीविका के साधनों की कमी और संसाधनों का असमान वितरण मछुआरा समुदायों की कमजोरी में योगदान करते हैं।

क्षेत्र के विकास के लिए सरकार की पहल

- **राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (NFDB):** 2006 में स्थापित NFDB भारत में मत्स्य विकास की योजना और संवर्धन के लिए शीर्ष निकाय के रूप में कार्य करता है।
- **नीली क्रांति:** 2015 में प्रारंभ की गई नीली क्रांति का उद्देश्य मत्स्य पालन क्षेत्र के सतत् विकास और प्रबंधन को बढ़ावा देना है।
- **सागरमाला कार्यक्रम:** 2015 में प्रारंभ किए गए सागरमाला कार्यक्रम का उद्देश्य बंदरगाह आधारित विकास को बढ़ावा देना और भारत के समुद्री क्षेत्र की क्षमता को प्रशस्त करना है।
    - इसमें मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास को समर्थन देने के लिए मछली पकड़ने के बंदरगाह, कोल्ड चेन अवसंरचना और मछली प्रसंस्करण सुविधाएँ विकसित करने की पहल सम्मिलित है।
- **प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY):** 2020 में प्रारंभ की गई इस योजना का उद्देश्य मछली उत्पादन बढ़ाना, जलीय कृषि को बढ़ावा देना और बुनियादी ढाँचे में सुधार करना है।
- मत्स्य पालन क्षेत्र के लिए बुनियादी ढाँचे की आवश्यकता को पूरा करने के लिए, केंद्र सरकार ने 2018-19 के दौरान 7522.48 करोड़ रुपये की कुल निधि के साथ मत्स्य पालन और जलीय कृषि बुनियादी ढाँचा विकास कोष (FIDF) बनाया।
    - 2018-19 से 2022-23 की अवधि के दौरान FIDF के कार्यान्वयन के पहले चरण में, विभिन्न मत्स्य पालन बुनियादी ढाँचे के निर्माण के लिए कुल 121 मत्स्य पालन बुनियादी ढाँचे परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है।
- **राष्ट्रीय मत्स्य पालन नीति:** भारत सरकार ने मत्स्य पालन क्षेत्र के सतत् विकास के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करने के लिए 2020 में राष्ट्रीय मत्स्य पालन नीति तैयार की।
    - यह नीति उत्तरदायी मत्स्य पालन प्रबंधन को बढ़ावा देने, जलीय जैव विविधता के संरक्षण, मछली उत्पादन को बढ़ाने और मछुआरों और मत्स्य कृषकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार लाने पर केंद्रित है।
- **मत्स्यपालक विकास एजेंसियाँ (FFDA):** सरकार ने मत्स्यपालकों को तकनीकी मार्गदर्शन, प्रशिक्षण और विस्तार सेवाएँ प्रदान करने के लिए जिला स्तर पर FFDA की स्थापना की है।
    - ये एजेंसियाँ आधुनिक जलकृषि पद्धतियों के बारे में ज्ञान का प्रसार करने, ऋण और इनपुट तक पहुँच को सुगम बनाने तथा मत्स्य पालन क्षेत्र में उद्यमशीलता को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

- **तटीय जलीय कृषि प्राधिकरण (CAA): CAA** सतत् विकास और पर्यावरण संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए तटीय जलीय कृषि गतिविधियों को विनियमित और प्रोत्साहन देता है।
    - यह झींगा पालन के लिए दिशानिर्देश तैयार करता है, जलकृषि प्रयोजनों के लिए तटीय भूमि के उपयोग को विनियमित करता है, तथा तटीय पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव को रोकने के लिए पर्यावरण मानदंडों के अनुपालन की निगरानी करता है।

आगे की राह

- देश की विस्तृत तटरेखा, असंख्य नदियों और अंतर्देशीय जल निकायों को देखते हुए, भारत में मत्स्य पालन क्षेत्र में वृद्धि और विकास की महत्त्वपूर्ण संभावनाएँ हैं।
- **इस क्षेत्र को सहायता करने वाले उपाय:**
    - अवैध, असूचित और अनियमित (IUU) मछली पकड़ने की गतिविधियों से निपटने के लिए निगरानी एवं प्रवर्तन तंत्र को सुदृढ़ करना।
    - मत्स्य पालन में स्थायी प्रथाओं और आधुनिक तकनीकों को अपनाने के लिए वित्तीय सहायता एवं प्रोत्साहन प्रदान करना।
    - मैंग्रोव, प्रवाल भित्तियों और आर्द्रभूमि जैसे जलीय आवासों का संरक्षण और पुनर्स्थापन सुनिश्चित करना।
    - मछुआरों के लिए उचित मूल्य सुनिश्चित करने तथा घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक उनकी पहुँच सुनिश्चित करने के लिए आपूर्ति श्रृंखला बुनियादी ढाँचे को मजबूत करना और बेहतर बाजार संपर्क स्थापित करना।

Source: TH

स्वास्थ्य: 2025 में आशा और वादे की नई किरणें

संदर्भ

- जैसे-जैसे हम 2025 के करीब पहुँच रहे हैं, 2024 में विभिन्न स्वास्थ्य देखभाल विशेषज्ञताओं में अभूतपूर्व प्रगति परिवर्तनकारी संभावनाएँ और नई आशा प्रदान कर रही है।

वज़न घटाने के उपचारों में सफलताएँ

- ग्लूकागन-जैसे पेप्टाइड-1 (GLP-1) रिसेप्टर एगोनिस्ट मोटापे, मधुमेह और संबंधित स्वास्थ्य स्थितियों के प्रबंधन के लिए अत्यधिक प्रभावी समाधान के रूप में उभरे हैं।
- ज़ेपबाउंड, ओज़ेम्पिक और वेगोवी जैसी उल्लेखनीय दवाओं ने वजन घटाने और चयापचय स्वास्थ्य में सुधार लाने में उल्लेखनीय प्रभावकारिता प्रदर्शित की है।

कैंसर: इम्यूनोथेरेपी में नवाचार

- **CAR-T सेल थेरेपी:** इम्यूनोथेरेपी में प्रगति कैंसर कोशिकाओं को लक्षित करने के लिए शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली का लाभ उठाकर कैंसर के उपचार को पुनर्परिभाषित कर रही है।
    - भारत द्वारा अपनी पहली घरेलू CAR-T थेरेपी, NexCAR19 का शुभारंभ, एक बड़ी सफलता का प्रतिनिधित्व करता है।

- **व्यक्तिगत कैंसर टीके:** ब्रिटेन में, कैंसर वैक्सीन लॉन्च पैड (CVLP) व्यक्तिगत रोगियों के लिए mRNA-आधारित टीकों की खोज कर रहा है।
- **भारत में HPV टीकाकरण अभियान:** भारत में 2025 में मानव पेपिलोमावायरस (HPV) टीकाकरण का आगामी राष्ट्रव्यापी अभियान कैंसर की रोकथाम में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

अल्ज़ाइमर रोग

- अल्जाइमर रोग एक प्रगतिशील मस्तिष्क विकार है, जो स्मृति हानि और संज्ञानात्मक गिरावट का कारण बनता है। यह रोग विश्व भर में लाखों लोगों को प्रभावित करता है, भारत में इसके लगभग 5.3 मिलियन मामले हैं।
- लेकेम्बी (लेकेनेमैब) और किसुनला (डोनानेमैब-azbt) को एमिलॉयड बीटा प्लेक को साफ करने के लिए विकसित किया गया है, जो संज्ञानात्मक गिरावट में योगदान करने वाला माना जाता है।

जीन संपादन

- जीन संपादन से आनुवांशिक रोगों के उपचार में क्रांति लाने की क्षमता है।
- 2023 में, FDA ने 12 वर्ष और उससे अधिक आयु के रोगियों में सिकल सेल रोग (SCD) के लिए कोशिका-आधारित उपचार, कैसगेवी एवं लाइफजेनिया को मंजूरी दी, जो संभावित उपचार की पेशकश करता है।
- 2024 में, वर्वे थेरेप्यूटिक्स ने VERVE-101 और VERVE-102, प्रायोगिक चिकित्सा प्रस्तुत की, जिसका उद्देश्य यकृत में PCSK9 जीन को लक्षित करके कोलेस्ट्रॉल को कम करना है।
- ये उपचार PCSK9 जीन को स्थायी रूप से निष्क्रिय करके हेटेरोज़ायगस फैमिलियल हाइपरकोलेस्ट्रोलेमिया (HeFH) और एथेरोस्क्लेरोटिक कार्डियोवैस्कुलर रोग (ASCVD) के रोगियों के लिए आशा प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष

- भारत के लिए, 2025 और उसके आगे के लिए न केवल इन नए उपचारों को अपनाना आवश्यक होगा, बल्कि यह सुनिश्चित करने के लिए ठोस प्रयास की भी आवश्यकता होगी कि ये उन लोगों तक पहुँचें जिन्हें इनकी सबसे अधिक आवश्यकता है।
- इसमें स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढाँचे को मजबूत करना, स्वास्थ्य बीमा कवरेज का विस्तार करना, तथा इन उपचारों को व्यापक जनसंख्या तक सुलभ बनाने के लिए अनुसंधान में निवेश करना सम्मिलित है।

Source: IE

संक्षिप्त समाचार

बाल्टिक सागर(Baltic Sea)

संदर्भ

- सागरीय विद्युत एवं इंटरनेट केबल कट जाने के बाद नाटो बाल्टिक सागर में सैन्य उपस्थिति बढ़ाएगा।

बाल्टिक सागर का परिचय

- यह पृथ्वी पर सबसे नवीन सागर है, जिसका निर्माण 10,000-15,000 वर्ष पहले हुआ था, जब अंतिम हिमयुग के अंत में हिमनद पीछे हट गए थे।
- यह उत्तरी यूरोप में स्थित है, जो डेनमार्क, एस्टोनिया, फिनलैंड, जर्मनी, लाटविया, लिथुआनिया, पोलैंड, रूस और स्वीडन से घिरा हुआ है।
- यह ग्रह (पृथ्वी) पर सफेद जल के सबसे बड़े निकायों में से एक है, जो फिनलैंड की खाड़ी द्वारा सेंट पीटर्सबर्ग से जुड़ा हुआ है।

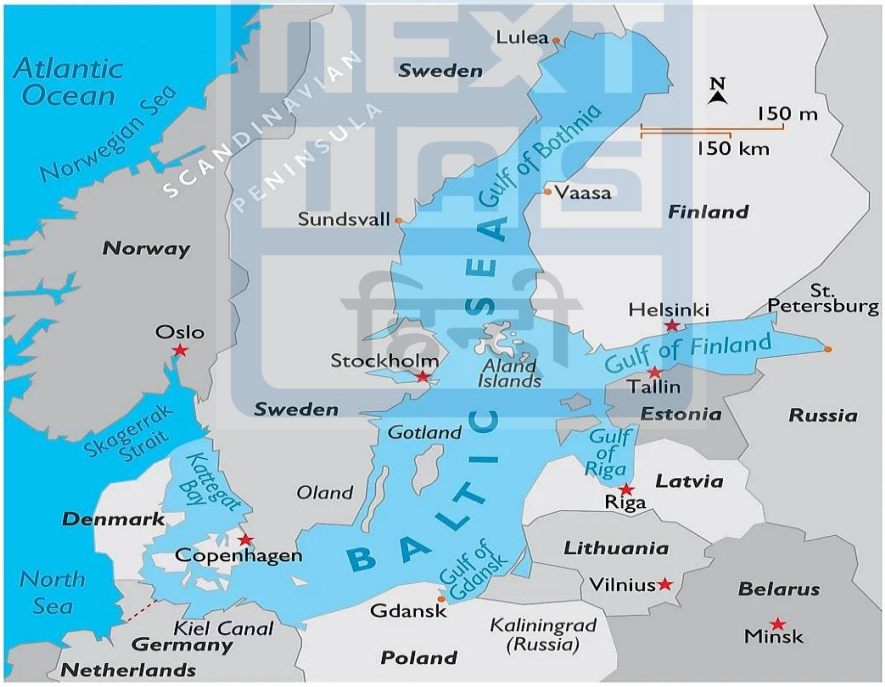

उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (NATO)

- 1949 में स्थापित यह गठबंधन यूरोप और उत्तरी अमेरिका के देशों के मध्य एक अंतर-सरकारी सैन्य गठबंधन है।
- यह सामूहिक रक्षा के सिद्धांत पर कार्य करता है, अर्थात एक सदस्य राष्ट्र पर हमले को सभी सदस्य राष्ट्रों पर हमला माना जाता है।
- ब्रुसेल्स (बेल्जियम) में मुख्यालय वाले नाटो में वर्तमान में 32 देश सदस्य हैं।

Source: Reuters

PM केयर्स फंड

संदर्भ

- प्रधानमंत्री नागरिक सहायता एवं आपातकालीन राहत कोष (PM केयर्स फंड) को वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान 912 करोड़ रुपये का योगदान प्राप्त हुआ।

परिचय

- PM केयर्स फंड को 2020 में पंजीकरण अधिनियम, 1908 के अंतर्गत एक सार्वजनिक धर्मार्थ ट्रस्ट के रूप में पंजीकृत किया गया था।
- इसकी स्थापना कोविड-19 महामारी के मद्देनजर की गई थी।
- **उद्देश्य:** COVID-19 महामारी के कारण उत्पन्न किसी भी प्रकार की आपातकालीन या संकटपूर्ण स्थिति से निपटना तथा प्रभावित लोगों को राहत प्रदान करना।
- **शासन:** प्रधानमंत्री PM केयर्स फंड के पदेन अध्यक्ष हैं, जबकि रक्षा मंत्री, गृह मंत्री और वित्त मंत्री फंड के पदेन ट्रस्टी हैं।
- यह सरकारी बजट का भाग नहीं है, और इसका कामकाज सरकार के प्रत्यक्ष वित्तीय नियंत्रण से पृथक् है।
- **कर लाभ:** PM केयर्स फंड में दान करने पर आयकर अधिनियम, 1961 के अंतर्गत 80G के अंतर्गत 100% छूट का लाभ मिलेगा।
    - दान को कंपनी अधिनियम, 2013 के अंतर्गत कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) व्यय के रूप में भी गिना जाएगा।

Source: IE

सियांग अपर बहुद्देशीय परियोजना (SUMP)।

संदर्भ

- अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री ने दावा किया है कि प्रस्तावित सियांग अपर बहुउद्देशीय परियोजना (SUMP) के बारे में स्थानीय लोगों को गुमराह करने के लिए गलत सूचना प्रसारित की जा रही है।

परिचय

- **अवस्थिति:** यह परियोजना अरुणाचल प्रदेश के ऊपरी सियांग जिले में स्थित है, जो भारत के पूर्वोत्तर भाग में है।
- **सियांग नदी:** यह ब्रह्मपुत्र नदी की एक प्रमुख सहायक नदी है।
    - इसका उद्गम तिब्बत में कैलाश पर्वत के निकट होता है, जहाँ इसे यारलुंग त्सांगपो के नाम से जाना जाता है।
    - यह नदी सियांग के रूप में अरुणाचल प्रदेश में प्रवेश करने से पहले 1,000 किलोमीटर से अधिक पूर्व की ओर यात्रा करती है।
    - आगे चलकर असम में यह नदी दिबांग और लोहित जैसी सहायक नदियों से मिलकर ब्रह्मपुत्र बन जाती है।

- **SUMP की क्षमता:** 10,000 मेगावाट से अधिक।
- **बहुउद्देशीय प्रकृति:** एक बहुउद्देशीय परियोजना के रूप में, SUMP का उद्देश्य सिर्फ विद्युत उत्पादन से अधिक कार्य करना है:
- **बाढ़ नियंत्रण:** बाँध और जलाशय नदी के प्रवाह को नियंत्रित करने में सहायता करेंगे, जिससे निचले क्षेत्रों में, विशेष रूप से असम में, बाढ़ का जोखिम कम हो जाएगा।
- **सिंचाई:** यह परियोजना सिंचाई के लिए जल उपलब्ध करा सकती है, जिससे क्षेत्र में कृषि उत्पादकता में सुधार होगा।
- **जल आपूर्ति:** जल भंडारण का उपयोग घरेलू और औद्योगिक उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है।
- **पर्यावरण एवं सामाजिक चिंताएँ:**
    - **स्थानीय समुदायों का विस्थापन:** बाँधों और जलाशयों के निर्माण के परिणामस्वरूप नदी के किनारे रहने वाले लोगों का विस्थापन होता है।
    - **पारिस्थितिक प्रभाव:** नदी पारिस्थितिकी तंत्र में परिवर्तन से जैव विविधता, मत्स्य पालन और नीचे की ओर जल की उपलब्धता प्रभावित होती है।
    - **भूकंपीय जोखिम:** यह क्षेत्र भूकंप-प्रवण है, जिससे ऐसे क्षेत्र में बड़े बाँधों की सुरक्षा को लेकर चिंताएँ बढ़ जाती हैं।

Source: IE

एच. पाइलोरी का पता लगाने की नई विधि

समाचार में

शोधकर्ताओं ने भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में, जहाँ निदान प्रयोगशालाओं तक पहुँच सीमित है, H. पाइलोरी और इसके एंटीबायोटिक प्रतिरोध उत्परिवर्तनों का पता लगाने के लिए एक लागत प्रभावी पॉइंट-ऑफ-केयर निदान सेवा, FELUDA विकसित की है।

H. पाइलोरी

- H. पाइलोरी एक ग्राम-नेगेटिव, माइक्रोएरोफिलिक जीवाणु है जो मनुष्यों को संक्रमित करता है, तथा सामान्यतः पेट में रहता है।
- इससे पेट की परत में सूजन और अल्सर हो जाता है, जिससे जठरांत्र संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं।
    - यह क्रोनिक गैस्ट्राइटिस, पेप्टिक अल्सर, गैस्ट्रिक लिंफोमा और गैस्ट्रिक कैंसर का प्रमुख कारण है
- संक्रमण मल-मौखिक, गैस्ट्रिक-मौखिक, मौखिक-मौखिक या यौन मार्गों के माध्यम से होता है, तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति उच्च संक्रमण प्रसार के लिए एक महत्त्वपूर्ण जोखिम कारक है।
- **H. पाइलोरी का वैश्विक प्रभाव:** H. पाइलोरी वैश्विक जनसंख्या के 43% से अधिक लोगों को संक्रमित करता है और पेप्टिक अल्सर, गैस्ट्राइटिस, अपच और यहां तक कि गैस्ट्रिक कैंसर जैसे जठरांत्र संबंधी विकारों का कारण बनता है।
    - 23S राइबोसोमल RNA जीन में उत्परिवर्तन के कारण क्लैरिथ्रोमाइसिन के प्रति प्रतिरोध एक बढ़ता हुआ सार्वजनिक स्वास्थ्य खतरा है, जो उपचार को जटिल बना रहा है।

- **नवीन निदान उपकरणों की आवश्यकता:** इस समस्या से निपटने के लिए, H. पाइलोरी और इसके एंटीबायोटिक प्रतिरोध का पता लगाने के लिए लागत प्रभावी, तीव्र निदान उपकरणों की आवश्यकता है, विशेष रूप से कम सुविधा वाले क्षेत्रों में।
- **CRISPR-आधारित निदान:** CRISPR प्रौद्योगिकियाँ सटीक DNA पहचान के लिए मार्गदर्शक RNAs को डिजाइन करके विशिष्ट उत्परिवर्तनों का पता लगाने में उच्च सटीकता प्रदान करती हैं।
  - शोधकर्ताओं ने पहले CRISPR-Cas9 विधियों पर शोध किया था, लेकिन विशिष्ट PAM अनुक्रमों की आवश्यकता के कारण उन्हें सीमाओं का सामना करना पड़ा था।
- **विकास:** अध्ययन में en31-FnCas9 का अन्वेषण किया गया, जो फ्रांसिसेला नोविसिडा से प्राप्त एक इंजीनियर प्रोटीन है, जो PAM अनुक्रम सीमा को पार करता है और क्लैरिथ्रोमाइसिन प्रतिरोध से संबंधित H. पाइलोरी उत्परिवर्तन का सफलतापूर्वक पता लगाता है।
  - अध्ययन ने गैस्ट्रिक बायोप्सी नमूनों में H. पाइलोरी और इसके प्रतिरोध उत्परिवर्तन का पता लगाने में en31-FnCas9 की प्रभावशीलता को प्रदर्शित किया।
  - तीव्र, दृश्य परिणामों के लिए इसे पार्श्व प्रवाह-आधारित परीक्षण पट्टी (FELUDA) के साथ संयोजित किया गया, जिससे यह दूरस्थ नैदानिक सेटिंग्स के लिए आदर्श बन गया।

Source:PIB

स्मार्ट सिटी मिशन(SCM)

संदर्भ

- भारतीय प्रबंधन संस्थान, बेंगलुरु के एक अध्ययन से पता चलता है कि स्मार्ट सिटीज मिशन के अंतर्गत स्मार्ट कक्षाओं की शुरूआत से 2015-16 से 2023-24 तक 19 शहरों में समग्र नामांकन में 22% की वृद्धि हुई है।

स्मार्ट सिटी मिशन (SCM) का परिचय

- यह 2015 में प्रारंभ की गई एक केन्द्र प्रायोजित योजना है।
- इसमें 100 शहर सम्मिलित हैं और इसका क्रियान्वयन शहरी विकास मंत्रालय (MoUD) तथा सभी राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों (UT) की सरकारों द्वारा किया जा रहा है।
- मूल रूप से 2019-20 तक पूरा होने के लिए निर्धारित SCM को 31 मार्च 2025 तक बढ़ा दिया गया है, जिसमें नवंबर 2024 तक 91% परियोजनाएँ पूरी हो जाएँगी।
- स्मार्ट शहरों की अवधारणा जिन छह मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित है, वे हैं:

- **उद्देश्य और महत्त्व:**
  - ऐसे शहरों को बढ़ावा देना जो मूलभूत बुनियादी ढाँचे उपलब्ध कराते हैं और अपने नागरिकों को सभ्य जीवन स्तर, स्वच्छ एवं सतत् पर्यावरण तथा 'स्मार्ट' समाधानों का अनुप्रयोग प्रदान करते हैं।
  - शहरों को रहने योग्य, समावेशी, टिकाऊ बनाना (क्षेत्र-आधारित विकास)।
  - रोजगार के अवसर सृजित करें।

Source: TH

पनामा नहर (Panama Canal)

समाचार में

- डोनाल्ड ट्रम्प ने उच्च शुल्क और आस-पास के बंदरगाहों में चीनी प्रभाव की चिंताओं का उदाहरण देते हुए नहर पर अमेरिकी नियंत्रण पुनः लागू करने की चेतावनी दी।
  - पनामा के राष्ट्रपति जोस राउल मुलिनो ने ट्रम्प की धमकी को खारिज करते हुए दोहराया कि नहर पूरी तरह पनामा के नियंत्रण में है।

पनामा नहर का परिचय

- पनामा नहर प्रशांत और अटलांटिक महासागरों को जोड़ने वाला 82 किमी (51 मील) लंबा कृत्रिम जलमार्ग है, जो जहाजों को हजारों मील एवं हफ्तों की यात्रा के समय में बचत करता है।
- **निर्माण इतिहास:** स्पेनिश उपनिवेशवादियों ने 1530 के दशक में इस नहर का अध्ययन किया था, और फ्रांसीसी प्रयास विफल होने के पश्चात्, पनामा की स्वतंत्रता का समर्थन करने के बाद, 1903 में अमेरिका ने इस पर अधिकार कर लिया।
  - अमेरिका ने नहर के निर्माण और प्रशासन के लिए पनामा को 10 मिलियन डॉलर वार्षिक भत्ता दिया, जिसके परिणामस्वरूप 1914 में नहर का उद्घाटन हुआ।
- **महत्त्व:** इससे जहाजों के लिए यात्रा का समय, जैसे कि लॉस एंजिल्स से न्यूयॉर्क तक की यात्रा, दक्षिण अमेरिका के दक्षिणी मार्ग की तुलना में लगभग 8,000 मील (22 दिन) कम हो जाता है।
- **अमेरिकी नियंत्रण और हस्तांतरण:** अमेरिकी नियंत्रण को लेकर तनाव बढ़ गया, विशेष रूप से 1956 के स्वेज संकट के पश्चात्।
  - 1977 में कार्टर-टोरिजोस संधि के तहत पनामा को 1999 तक नहर पर पूर्ण नियंत्रण प्रदान किया गया।
- **हालिया घटनाक्रम:** जलवायु परिवर्तन और सूखे के कारण जल स्तर कम हो गया है, जिससे नहर में परिवहन सीमित हो गया है।

Source: DD News

ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का 813 वाँ उर्स

संदर्भ

- सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का 813वां उर्स अजमेर स्थित दरगाह ख्वाजा साहब में झंडा रस्म के साथ प्रारंभ हुआ।

ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती

- **प्रारंभिक जीवन:** मोइनुद्दीन एक प्रतिष्ठित सूफी संत थे, जिनका जन्म 1141 ई. में फारस (आधुनिक ईरान) में हुआ था और माना जाता है कि वे मुहम्मद के वंशज थे।
- **आध्यात्मिक प्रशिक्षण:** ख्वाजा मोइनुद्दीन ने इस्लामी शिक्षा के केंद्र बुखारा और समरकंद में औपचारिक शिक्षा प्राप्त की।
    - रहस्यवादी इब्राहिम कंदोजी से भेंट के पश्चात् वह आध्यात्मिक यात्रा पर निकल पड़े।
    - बाद में उन्हें हेरात के निकट ख्वाजा उस्मान हारूनी द्वारा चिश्ती सूफी संप्रदाय में दीक्षित किया गया।
- 1192 ई. में, मुहम्मद गौर से पराजय के बाद चौहान वंश के पतन के दौरान, मोइनुद्दीन अजमेर पहुँचे।
- **शिष्य:** ख्वाजा मोइनुद्दीन की शिक्षाओं को कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, बाबा फरीदुद्दीन, निजामुद्दीन औलिया और चिराग देहलवी जैसे प्रमुख शिष्यों ने आगे बढ़ाया।

योगदान और शिक्षाएँ

- **सूफी मूल्यों का प्रचार:** ख्वाजा मोइनुद्दीन ने इस्लाम के अंदर सूफीवाद को एक भक्ति और तपस्वी मार्ग के रूप में प्रचारित किया।
    - उन्होंने धार्मिक सीमाओं से परे ईश्वरीय प्रेम, मानवता की सेवा और समानता पर बल दिया।
- **अंतर-धार्मिक सद्भाव:** हिंदू मनीषियों और संतों के साथ जुड़कर उन्होंने धार्मिक रूढ़िवादिता को अस्वीकार करते हुए आपसी सम्मान एवं समझ की भावना को बढ़ावा दिया।
- अपनी निस्वार्थ सेवा के लिए उन्हें "गरीब नवाज" (गरीबों का मित्र) की उपाधि मिली।
- **विरासत:** मुगल सम्राट अकबर मोइनुद्दीन का बहुत आदर करते थे और उनकी दरगाह पर तीर्थयात्रा करते थे।

Source: AIR

चालू खाता घाटा

संदर्भ

- जुलाई-सितंबर 2024 तिमाही के दौरान भारत का चालू खाता घाटा (CAD) मामूली रूप से कम होकर $11.2 बिलियन हो गया, जो सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के 1.2% के बराबर है।

चालू खाता घाटा (CAD)

- चालू खाता घाटा तब होता है जब किसी देश का वस्तुओं और सेवाओं का आयात उसके निर्यात से अधिक हो जाता है।
- यह किसी देश के आर्थिक स्वास्थ्य का एक महत्त्वपूर्ण संकेतक है और व्यापार संतुलन, विदेश से शुद्ध आय एवं शुद्ध वर्तमान हस्तांतरण को प्रदर्शित करता है।

CAD के घटक

- **व्यापार संतुलन:** वस्तुओं के निर्यात और आयात के मूल्य के बीच का अंतर।
- **सेवाएँ:** इसमें सॉफ्टवेयर निर्यात, यात्रा और अन्य सेवा प्राप्तियाँ सम्मिलित हैं।

- **शुद्ध आय:** इसमें ब्याज, लाभांश और प्रेषण सम्मिलित हैं।
- **शुद्ध स्थानान्तरण:** इसमें प्रवासियों से प्राप्त निजी धन सम्मिलित है।

कम CAD का महत्त्व

- **आर्थिक स्थिरता:** यह वैश्विक आर्थिक आघातों, जैसे कि उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में वस्तुओं की कीमतों या ब्याज दरों में परिवर्तन, के प्रति संवेदनशीलता को कम करता है।
- **कम हुआ बाह्य ऋण:** कम CAD के कारण, भारत अपने घाटे को समाप्त करने के लिए विदेशी स्रोतों से कम उधार लेता है, जिससे बाह्य ऋण-GDP अनुपात को नियंत्रित रखा जा सकता है।
- **वैश्विक विश्वास:** कम चालू खाता घाटा (CAD) वैश्विक वित्तीय बाजारों में भारत की विश्वसनीयता को बढ़ाता है, जिससे इसकी क्रेडिट रेटिंग में सुधार होता है।

Source: IE

■■■■